21

''परमेश्वर के तुल्य''

यूहन्ना 5:16-47, एक निकट दृष्टि

गलील की अपनी महान सेवकाई के आरज़्भ में, यीशु यरूशलेम में गया था। वहां उसने बैतसैदा के कुण्ड के निकट एक आदमी को चंगा किया (यूहन्ना 5:2, 5, 8, 9)। इस कहानी को बताते हुए, यूहन्ना ने यह स्पष्ट टिप्पणी जोड़ी: ''वह सज़्त का दिन था'' (आयत 10क)।[1]

फंसाने वाले आरोप (आयतें 16-18)

उस चंगाई का परिणाम यहूदी अधिकारियों के साथ इसकी आमने-सामने की लड़ाई था। धार्मिक अगुओं ने यीशु पर सज़्त का उल्लंघन करने का आरोप लगाया।[2]

हमारे प्रभु का उज़र था ''मेरा पिता अब तक काम करता है और मैं भी काम करता हूं'' (आयत 17)। अन्य शज़्दों में, ''यह सही है कि परमेश्वर ने सज़्त के दिन विश्राम किया था,[3] परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने भलाई करना छोड़ दिया। सज़्त के दिन भी, वह संसार को स्थिर रखता है।[4] सज़्त के दिन भी, वह सूरज और बारिश देता है।''[5] यीशु का तर्क था कि परमेश्वर सातवें दिन पर लोगों की सहायता करता है, इसलिए उसके (अर्थात यीशु के) लिए भी इस दिन लोगों की सहायता करना उपयुज़्त था।

मसीह की बातें यहूदी अगुओं को बुरी लगीं, ज़्योंकि वे उसके तर्क के अर्थ को समझ गए थे। सबसे पहले तो उसने ''*मेरा* पिता'' कहा। लोग आम तौर पर ''हमारा पिता'' कहते थे (मज़ी 6:9; रोमियों 1:7; 1 कुरिन्थियों 1:3), परन्तु यीशु ने ''मेरा पिता'' कहा (मज़ी 7:21; 10:32; 11:27), जो उसके परमेश्वर से एक विशेष सज़्बन्ध को दिखाता था। दूसरी बात, यीशु ने परमेश्वर को और अपने आप को एक ही काम करते हुए दिखाया। ''मेरा पिता अब तक काम करता है, और मैं भी काम करता हूं।'' जिस कारण, ''यहूदी और भी अधिक उसे मार डालने का प्रयत्न करने लगे, कि वह ... परमेश्वर को अपना पिता कह कर *अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था*'' (आयतें 17, 18)।

मुझे आश्चर्य होता है कि उदारवादी धर्मशास्त्री सुसमाचार के वृज़ांतों को पढ़ सकते हैं और कहते हैं कि यीशु ने कभी परमेश्वर का पुत्र होने का दावा नहीं किया, अर्थात कभी परमेश्वर होने का दावा नहीं किया। मसीह के समय के धार्मिक अगुओं को उसके शज़्दों के महत्व को समझने में दिज़्कत नहीं होती थी।

यदि यीशु के कहने का अर्थ यह *न* होता कि वह ''परमेश्वर के तुल्य'' है, तो उसके लिए यह कहना आसान होता कि ''नहीं, नहीं, आपने मुझे गलत समझा है! मेरे कहने का अर्थ यह *नहीं* था।'' उसने उनके आरोप को गलत नहीं कहा, बल्कि उसने उनके आरोप का इस्तेमाल अपने पिता के साथ अपने सम्बन्ध पर एक शानदार प्रवचन देने के लिए एक अवसर के रूप में किया। यूहन्ना की पुस्तक में यह एक महान प्रवचन है। समय हमें एक-एक आयत पर चर्चा करने की अनुमति नहीं देगा, हम मुख्य विचारों पर ध्यान अवश्य देंगे।

आश्चर्यजनक दावे (आयतें 19-30)

यीशु की प्रस्तावना

यीशु की मूल प्रस्तावना यह थी कि वह और पिता, जो काम उन्होंने किए उनमें वे *इकट्ठे* थे। यह वाक्यांश कि ''अपने आप को परमेश्वर के तुल्य ठहराता था'' का अर्थ यह लिया गया हो सकता है कि मसीह अपने आप को परमेश्वर के प्रतिद्वंद्वी के रूप में मानता था, परन्तु उसने ज़ोर दिया कि ऐसा कुछ नहीं है। उसने ज़ोर देकर कहा कि ''पुत्र अपने आप कुछ नहीं कर सकता'' (आयत 19)। फिर, उसने कहा ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता'' (आयत 30)।

उदाहरण

यीशु ने कई उदाहरण दिए कि वह और उसका पिता एक कैसे हैं। 21 से 30 आयतों में तीन विषय बार-बार आते हैं: जीवन देना, मुर्दों को जिलाना और मनुष्य जाति का न्याय करना। यहूदियों का मानना था कि जीवन देने, मुर्दों को जिलाने और न्याय करने का विशेषाधिकार *परमेश्वर को ही* (और केवल उसी का) था[6]-परन्तु मसीह ने दृढ़ता से दावा किया कि इन कामों को करने में वह और परमेश्वर सहकर्मी हैं।

(1) *जीवन देने में इकट्ठे।* यीशु ने पहले जीवन देने की बात की: ''ज्योंकि जैसे पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसे ही पुत्र भी जिन्हें चाहता है, उन्हें जिलाता है'' (आयत 21)। संदेश के इस मोड़ पर, शज्द सम्भवतया यीशु के आत्मिक जीवन देने की ओर ध्यान दिलाते थे। यीशु ने यह भी कहा कि ''मैं तुम से सच-सच कहता हूं, जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनेवाले की प्रतीति करता है,[7] अनन्त जीवन उसका है,[8] और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती[9] परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है'' (आयत 24)।

(2) *मुर्दों को जिलाने में इकट्ठे।* आयत 21 में किया गया दावा शारीरिक जीवन देने में शामिल किया जा सकता है। यीशु ने भविष्यवाणी की कि यहूदी लोग उसे उससे भी ''बड़े काम [आश्चर्यकर्म]'' करते देखेंगे, जो उन्होंने देखे थे, और ''अचम्भा'' करेंगे (आयत 20)। यह सम्भवतया मसीह की व्यक्तिगत सेवकाई के दौरान मुर्दों को जिलाने का हवाला था।[10] विशेषकर लाज़र को जिलाने से, जिससे यरूशलेम में बड़ी हलचल मचनी

थी (यूहन्ना 11:1-48; 12:1, 9-11)।

परन्तु यीशु की सामर्थ पृथ्वी पर रहने के समय अपनी सेवकाई के दौरान कुछ लोगों को मुर्दों में से जिलाने से कहीं ज़्यादा बढ़ गई। इस युग के अन्त का पूर्वानुमान लगाते हुए, उसने घोषणा की:

> ... वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द [अर्थात, मनुष्य के पुत्र का शब्द; आयत 27] सुनकर निकलेंगे। जिन्होंने भलाई की है[11] वे जीवन के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे और जिन्होंने बुराई की है वे दण्ड के पुनरुत्थान के लिए जी उठेंगे (आयतें 28, 29)।

द्वितीय आगमन के समय सभी मनुष्यों के सामान्य पुनरुत्थान के सम्बन्ध में यह स्पष्ट और संक्षिप्त वाक्य है।

(3) *न्याय करने में इकट्ठे।* जिस प्रकार आयत 28 और 29 में संकेत मिलता है कि पुनरुत्थान न्याय के दिन के बाद क्या होगा। इस कार्य में भी, यीशु अपने पिता के साथ होगा। उसने कहा, ''और पिता किसी का न्याय भी नहीं करता, परन्तु उसने न्याय करने का सब काम पुत्र को सौंप दिया है''[12] (आयत 22)। उसने ज़ोर देकर कहा कि परमेश्वर ने ''उसे न्याय करने का भी अधिकार दिया है, इसलिए कि वह मनुष्य का पुत्र है'' (आयत 27)। फिर, उसने दावा किया, ''मैं ... न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है'' (आयत 30)।

यह सवाल उठता है कि जीवन देने, मुर्दों को जिलाने और न्याय करने में यीशु और पिता इकट्ठे हैं तो उसके सुनने वालों को उन्हें कैसे ग्रहण करना चाहिए? मसीह ने कहा कि सब लोगों को चाहिए कि ''जैसे पिता का आदर करते हैं, वैसे ही पुत्र का भी आदर करें'' और उसने आगे कहा कि ''जो पुत्र का आदर नहीं करता, वह पिता का जिस ने उसे भेजा है, आदर नहीं करता'' (आयत 23)।

यीशु के दावे कितने स्पष्ट हैं! या तो उसे अपनी बातों के सच होने के प्रमाण देने के लिए या उन्हें वापस लेने के लिए बाध्य किया गया होगा।[13]

त्रुटिहीन सिफारिशें (आयतें 31-47)

यीशु जानता था कि वह और उसके दावे परीक्षा में हैं। उसने अपनी ओर से एक के बाद एक गवाहियां दीं।[14]

गवाहियों के बारे में उसका पहला कथन अजीब लगता है: ''यदि मैं आप ही अपनी गवाही दूं; तो मेरी गवाही सच्ची नहीं'' (आयत 31)। मसीह ने मूलत: यह कहा कि ''यदि मैं अपनी गवाही स्वयं दूं, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं होगी।'' यीशु अपने बारे में ''गवाही दे रहा'' था (आयतें 19-30)। संदर्भ से निकालने पर, आयत 31 से लग सकता है कि जैसे यीशु कह रहा हो कि वह सच नहीं बोल रहा था।

यूहन्ना 5 अध्याय में यीशु की सफ़ाई की तुलना अध्याय 8 में दी गई उसकी सफ़ाई

से की जानी चाहिए। वहां फरीसियों ने मसीह से कहा था, ''तू अपनी गवाही आप देता है; तेरी गवाही ठीक नहीं'' (8:13)। यीशु ने उज़र दिया था, ''यदि मैं अपनी गवाही आप देता हूं, तौ भी *मेरी गवाही ठीक है*'' (आयत 14)। फिर उसने आगे कहा, ''तुज़्हारी व्यवस्था में भी लिखा है; कि दो जनों की गवाही मिलकर ठीक होती है। एक तो मैं आप अपनी गवाही देता हूं, और दूसरा पिता मेरी गवाही देता है, जिसने मुझे भेजा'' (आयतें 17, 18)।

इन दो वाज़्यों की तुलना करने पर स्पष्ट हो जाता है कि यूहन्ना 5 अध्याय में यीशु किसी झूठ का अंगीकार नहीं कर रहा था, बल्कि वह यह मान रहा था कि मूसा की व्यवस्था के अनुसार, एक व्यज़्ति की गवाही पर्याप्त नहीं थी। दो या तीन लोगों की गवाही सही मानी जाती थी (गिनती 35:30; व्यवस्थाविवरण 17:6; 19:15; देखें मज़ी 18:16)। इसीलिए NASB के अनुवादकों ने आयत 31 में ''अकेला'' शज़्द जोड़ लिया, ज़्योंकि यदि मसीह ने अपनी गवाही अकेले दी होती, तो *यहूदी अदालत में* यह स्वीकार्य नहीं होनी थी।

इसलिए यीशु ने एक दूसरी गवाही जोड़ दी, जिसका उल्लेख अध्याय 8 में है: अपने पिता की। मसीह ने कहा, ''एक और है जो मेरी गवाही देता है, और मैं जानता हूं कि मेरी जो गवाही वह देता है, वह सच्ची है'' (यूहन्ना 5:32)। संदर्भ में यह गवाह परमेश्वर है।[15] यीशु ने इस बात पर ज़ोर दिया कि ''पिता जिस ने मुझे भेजा है, उसी ने मेरी गवाही दी है'' (आयत 37क)। कई गवाह पेश किए जा सकते थे, परन्तु वास्तव में हर गवाही एक सिद्ध गवाह अर्थात परमेश्वर की ओर से थी। इन यहूदियों ने न तो परमेश्वर को देखा और न उसकी आवाज़ सुनी थी (आयत 37ख), परन्तु उसने अवश्य अपने लोगों के द्वारा उन से बात की।

यूहन्ना की गवाही

यीशु के दावों की सच्चाई केवल मनुष्य की गवाही के सहारे नहीं थी (आयतें 34क, 36क), परन्तु पहला गवाह जो बुलाया गया, वह एक मनुष्य था, जिसका नाम यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला था। यूहन्ना को इसलिए बुलाया गया, ज़्योंकि वह परमेश्वर का विशेष दूत था (मलाकी 3:1; लूका 7:27) और मसीहा के विषय में उसकी गवाही का कभी खण्डन नहीं किया गया था।

मसीह ने कहा, ''तुम ने यूहन्ना से पुछवाया और उस ने सच्चाई की गवाही दी है'' (यूहन्ना 5:33)। यह बात उस समय की है, जब यरूशलेम से यूहन्ना से पूछने के लिए एक प्रतिनिधिमण्डल आया था (यूहन्ना 1:19-28)। यूहन्ना ने उन्हें बताया था, ''... तुज़्हारे बीच में एक व्यज़्ति खड़ा है, जिसे तुम नहीं जानते। अर्थात मेरे बाद आनेवाला है, जिसकी जूती का बन्ध मैं खोलने के योग्य नहीं'' (यूहन्ना 1:26, 27)। अगले दिन, यूहन्ना ने यीशु की ओर इशारा करते हुए[16] कहा, ''देखो, यह परमेश्वर का मेमना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है!''; ''मैंने देखा, और गवाही दी है, तो यही परमेश्वर का पुत्र

है'' (आयतें 29, 34)।

यूहन्ना के जीवन का एक ही उद्देश्य था और वह लोगों को यीशु के पास लाना था। ''यूरोप के बड़े धार्मिक चित्रों में ग्रुनवल्ड का 'जॉन द बैपटिस्ट' प्रसिद्ध है। ... इस पेंटिंग की चौंकाने वाली विशेषता मसीह की ओर ध्यान दिलाते हुए यूहन्ना की अंगूठे के साथ वाली उंगली पर फोकस करती है।''[17]

यूहन्ना की गवाही के विषय में, मसीह ने कहा, ''वह तो जलता और चमकता हुआ दीपक था;[18] और तुम्हें कुछ देर तक उसकी ज्योति में, मगन होना अच्छा लगा'' (यूहन्ना 5:35)। इस वाक्य में ''कुछ देर तक'' शब्द महत्वपूर्ण हैं। आर.सी. फोस्टर ने लिखा है, ''कुछ देर के लिए उन्हें यूहन्ना की ज्योति अच्छी लगी थी। जब तक ज्योति उनके पापों पर नहीं पड़ी!''[19] उसके बाद उन्हें उससे कुछ नहीं चाहिए था।

यदि उन्होंने यूहन्ना की गवाही मान ली *होती,* तो वे यीशु की गवाही भी मान लेते। फिर उनका उद्धार हो सकता था (आयत 34ख)।

आश्चर्यकर्मों की गवाही

फिर मसीह ने अपने आश्चर्यकर्मों की गवाही की बात की: ''परन्तु मेरे पास जो गवाही है, वह यूहन्ना की गवाही से बड़ी है: क्योंकि जो काम पिता ने मुझे पूरा करने को सौंपा है अर्थात् यही काम जो मैं करता हूं, वे मेरे गवाह हैं, कि पिता ने मुझे भेजा है'' (आयत 36)। ''काम'' शब्द यीशु के जीवन की पूर्णता के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है; निश्चय ही जो कुछ भी उसने किया, उससे इसी तथ्य की गवाही मिली थी कि वह परमेश्वर का पुत्र है, परन्तु मसीह के मन में था कि उसने सारे आश्चर्यकर्म परमेश्वर की सामर्थ से किए थे।[20]

यरूशलेम में पिछली बार यीशु ने कई आश्चर्यकर्म किए थे (यूहन्ना 2:23)। उन अद्भुत कार्यों के विषय में निकुदेमुस ने कहा था, ''... हम जानते हैं, कि तू परमेश्वर की ओर से गुरु होकर आया है; क्योंकि कोई इन चिह्नों को, जो तू दिखाता है, यदि परमेश्वर उसके साथ न हो, तो नहीं दिखा सकता'' (यूहन्ना 3:2)। इस बार भी मसीह ने यरूशलेम में कम से कम एक आश्चर्यकर्म अवश्य दिखाया था। यह भी सम्भव है कि कुण्ड के निकट रहने वाला आदमी इन शब्दों के कहे जाने के समय पास ही हो।

यीशु के आलोचक यह इनकार नहीं कर सकते थे कि उसने आश्चर्यकर्म किए,[21] पर इसके बावजूद वे उसे मसीहा मानने से इनकार करते थे।

पवित्र शास्त्र की गवाही

यीशु ने गवाहों के रूप में परमेश्वर की ओर से दूत और चिह्नों को बुलाया था। अब उसने परमेश्वर के वचन की गवाही को बुलाया: ''तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो,[22] क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है'' (आयत 39)। पुराने नियम के सैकड़ों पद मसीह की ओर ध्यान दिलाते थे (भजन

संहिता 2; 22; यशायाह 53)। बाद में यीशु ने कहा, ''ये मेरी वे बातें हैं, जो मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कही थीं, कि यह अवश्य है कि जितनी बातें मूसा की व्यवस्था और भविष्यवक्ता और भजनों की पुस्तकों में मेरे विषय में लिखी हैं, सब पूरी हों'' (लूका 24:44)।

अपने ही ढंग से, यहूदी अगुवे पवित्र शास्त्र के प्रति समर्पित थे। रब्बियों के लेखों में कहा गया था, ''जिसने अपने लिए व्यवस्था की बातें पा लीं, उसने अपने लिए आने वाले संसार में जीवन पा लिया।''[23] इसी कारण वे पवित्र शास्त्र पर बारीकी से विचार करते थे। वे शब्दों को गिनते थे; वे अक्षरों को गिनते थे; वे हर ''मात्रा'' और हर ''बिन्दु''[24] को (मत्ती 5:18) धर्मवैज्ञानिक दूरबीन के माध्यम से देखते थे। फिर भी वे पवित्र शास्त्र के उस उद्देश्य को नहीं समझ पाते थे, जो लोगों को मसीह तक लाने के लिए बनाया गया था (गलातियों 3:24)।

वे उन लोगों की तरह थे, जो चौराहे पर लगे पथनिर्देशक को मापते, उसके रेखाचित्र बनाते और उसके विवरण लिखते हैं, परन्तु जिधर जाने का यह संकेत करते हैं, उधर नहीं जाते थे। वारेन बियरस्बे ने लिखा कि यहूदी लोग ''परमेश्वर के वचन को जानना चाहते थे, परन्तु वे वचन के परमेश्वर को नहीं जानते थे!''[25] यीशु ने माना कि वचन उनके दिमाग में तो था, परन्तु उनके मनों में नहीं था। उसने उन्हें बताया कि तुम ''उसके वचन को मन में स्थिर नहीं रखते'' (आयत 38)।

मूसा के लेखों की बात करते हुए, यीशु ने एक चौंकाने वाली बात कही थी कि पवित्र शास्त्र उसके बारे में गवाही देता है:

> यह न समझो, कि मैं पिता के साज्हने तुम पर दोष लगाऊंगा: तुम पर दोष लगाने वाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है। ज़्योंकि यदि तुम मूसा की प्रतीति करते, तो मेरी भी प्रतीति करते, इसलिए कि उस ने मेरे विषय में लिखा है। परन्तु यदि तुम उस की लिखी हुई बातों की प्रतीति नहीं करते,[26] तो मेरी बातों की ज़्योंकर प्रतीति करोगे (यूहन्ना 5:45-47)।

मूसा ने उस आने वाले ''वंश'' के बारे में लिखा था (उत्पत्ति 3:15; 22:18; देखें गलातियों 3:16)। उसने भविष्यवाणी की थी कि यह प्रतिज्ञा किया हुआ व्यक्ति यहूदा के गोत्र से ही आएगा (उत्पत्ति 49:10)। उसने अपने जैसे एक नबी के उत्पन्न होने की बात की थी (व्यवस्थाविवरण 18:15-18)। उसके *सभी* लेख मसीहा के पूर्वाभास के रूपों और प्रतिरूपों से भरे हुए थे।[27] इसलिए यीशु ने कहा कि मूसा न केवल उसके *पक्ष में* एक गवाह था, बल्कि अन्त में वह उनके, जिन्होंने उसे ठुकराया था *विरोध में* एक गवाह के रूप में खड़ा होगा। उसने ऐलान किया कि ''तुम पर दोष लगाने वाला तो है, अर्थात् मूसा जिस पर तुम ने भरोसा रखा है'' (यूहन्ना 5:45ख)।

उनके अधिकार पर इतने बड़े प्रमाण के बावजूद यहूदी अगुओं ने यीशु को ज़्यों ठुकराया? यीशु ने कहा, कि समस्या इच्छा और मन की थी। जो ''आप ही जानता था, कि

मनुष्य के मन में ज़्या है'' (यूहन्ना 2:25) उसने उन पर यह अभियोग लगाया: ''तुम जीवन पाने के लिए मेरे पास आना *नहीं चाहते*। ... तुम में *परमेश्वर का प्रेम नहीं* '' (5:40-42)।

एक समस्या यह थी कि ''वे वह आदर जो अद्वैत परमेश्वर की ओर से है'' नहीं बल्कि उस आदर को पाना चाहते थे, जो मनुष्यों की ओर से है (आयत 44)। (वास्तव में) यीशु ने अगुओं को बताया कि यदि कोई मसीहा होने का दावा करके आए, परन्तु उसमें स्वर्गीय सिफ़ारिशें न हों, तो वे उन्हें स्वीकार कर लेते थे, जब तक वह उनकी चापलूसी करके उनके एजेण्डे को बढ़ावा देते रहें (आयत 43ख)। इसके विपरीत, यहूदियों ने यीशु को ग्रहण करने से इनकार कर दिया, जो स्वर्ग की स्वीकृति लेकर आया था (आयत 43क), ज़्योंकि उसने उन्हें वह आदर नहीं दिया, जो उन्हें लगता था कि मिलना चाहिए।[28]

हम यरूशलेम के धार्मिक अधिकारियों की स्थिति को यह कहकर संक्षिप्त कर सकते हैं कि उन्हें जो ज्ञान था, वह सत्य नहीं था, उन्हें केवल वे बातें ही पता थीं, जिनका कोई महत्व नहीं था, वे सच्चाई के प्रति गूंगे, बहरे और अन्धे थे[29] (मज़ी 13:15)।

यह अहसास करना कि सच्चाई के उद्धार करने वाले ज्ञान के बिना वचन का, बल्कि वचन का गज़्भीर छात्र होना सज़्भव है, गज़्भीर नहीं है? परमेश्वर पवित्र शास्त्र के साथ हमारे सही व्यवहार (''सच्चाई से प्रेम''; 2 थिस्सलुनीकियों 2:10) और सही उद्देश्य के साथ (''प्रभु को जानना''; इब्रानियों 8:11) हमारी सहायता करे।

सारांश[30]

यहूदी अगुओं को उज़्मीद होगी कि यीशु पर सज़्त का उल्लंघन करने का आरोप लगाने से वह डर जाएगा, परन्तु वह डरा नहीं। इसके बजाय उसने उनकी चुनौतियों का सामना किया और कुछ बहुत मूलभूत दावे किए। ज़्योंकि यहूदी लोग उसके दावों का खण्डन नहीं कर पाए, इसलिए उन्हें चाहिए था कि वे उसे परमेश्वर का पुत्र मान लेते, परन्तु अफसोस कि वे ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हुए।

ज़्या हम तैयार होते हैं? यूहन्ना 5 अध्याय पहली शताज़्दी के लोगों के मनों की कठोरता को दिखाने के लिए नहीं लिखा गया था, बल्कि यह इज़्कीसवीं शताज़्दी में हमारे मनों को सामने लाने के लिए लिखा गया था।[31] यीशु के स्पष्ट दावे हम में से किसी को तटस्थ रहने की अनुमति नहीं देते। सी.एस. लुईस ने उन दावों के विषय में लिखा था:

> किसी भी वज़्ता के मुंह में जो परमेश्वर नहीं है, इन बातों का अर्थ वही होता जिसे मैं इतिहास के किसी भी पात्र द्वारा दिखाई गई मूर्खता अद्वितीय सनकी कह सकता हूं।
>
> ... आपको अपनी पसन्द चुननी ही होगी। या तो यह मनुष्य परमेश्वर का पुत्र था और है या कोई पागल या उससे भी बुरा। आप उसे मूर्ख कहकर उसका मुंह बन्द कर सकते हैं, आप एक दुष्टात्मा के रूप में उस पर थूक सकते और उसे मार सकते हैं; आप उसके पांवों में गिरकर उसे प्रभु और परमेश्वर कह सकते हैं।[32]

यूहन्ना 5 अध्याय में यीशु पर मुकदमा था–और आज भी मनुष्य जाति के मनों में उस पर मुकदमा है। आज *आप* जज हैं। आपका ज़्या फैसला है? ज़्या यीशु ने सच बोला था? ज़्या वह सचमुच वही था, जो होने का उसने दावा किया था? यदि आपका उज़र ''हां'' है, तो इस फैसले से आपके जीवन में ज़्या अन्तर आया है? इस पाठ को हर तरह से व्यावहारिक बनाने के लिए, पूछें कि आपके जीवन में इससे ज़्या अन्तर आना चाहिए। इस बारे में जितना स्पष्ट हो सकते हैं, हों। यीशु के स्पष्ट दावे उसके प्रति सच्चे समर्पण की मांग करते हैं।[33]

टिप्पणियां

[1]हो सकता है कि आप चंगाई की इस कहानी को विस्तार देना चाहें–और हो सकता है कि सज़्त और मनुष्यों की परज़्पराओं के सज़्बन्ध में विवरणों को भी शामिल करना चाहें। [2]यूहन्ना 5:16, 18 में यह आरोप अन्तर्निहित है। [3]उत्पज़ि 2:2 पढ़ें। [4]इब्रानियों 1:3 पढ़ें, जो परमेश्वरत्व के एक भाग के रूप में पुत्र के संसार को स्थिर रखने की बात करता है। [5]मज़ी 5:45 पढ़ें। [6]उत्पज़ि 18:25; व्यवस्थाविवरण 32:39 पढ़ें। [7]इस आयत का कई बार यह गलत शिक्षा देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि ''केवल विश्वास'' ही आत्मिक जीवन के लिए आवश्यक है। ''प्रतीति'' का इस्तेमाल यहां आज्ञाकारी विश्वास होने के व्यापक अर्थ में किया गया है। हमारे लिए ''भरोसा करके आज्ञा मानना'' आवश्यक है (मज़ी 7:21; मरकुस 16:16)। [8]कई बार इस आयत का इस्तेमाल यह गलत शिक्षा देने के लिए किया जाता है कि एक बार आत्मिक जीवन (उद्धार) पा लिया, तो नाश नहीं हो सकता। कुछ लोग कहते हैं कि ''नहीं तो, यह *अनन्त* जीवन नहीं होगा।'' परन्तु बाइबल इस बात में स्पष्ट है कि अविश्वास के कारण, परमेश्वर का बालक अनन्त जीवन से वंचित हो सकता है (1 कुरिन्थियों 10:12; याकूब 5:19, 20; 2 पतरस 2:20–22)। मेरे पास एक पेन होता था जिसकी गारन्टी जीवन भर के लिए थी, परन्तु वह पेन खो गया। सच्चाई यह है कि पेन की जीवन भर की गारन्टी का अर्थ यह नहीं था कि वह पेन मेरे *पास* जीवन भर रहेगा। [9]इस पद का इस्तेमाल कभी-कभी यह गलत शिक्षा देने के लिए किया जाता है कि मसीही लोगों को प्रभु के सामने न्याय के सिंहासन के आगे खड़ा नहीं होना पड़ेगा, परन्तु पौलुस ने कहा है कि ''हम सब के सब परमेश्वर के न्याय के सिंहासन के सामने खड़े होंगे'' (रोमियों 14:10), चाहे भले हों या बुरे (रोमियों 2:5–8; 14:10; 2 कुरिन्थियों 5:10)। [10]जहां तक परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया पवित्र शास्त्र बताता है, यीशु ने अभी किसी को मुर्दों में से जिलाया नहीं था।

[11]भलाई और बुराई करने के वाज़्य से यह सिद्ध नहीं होता कि हमने अपने कर्मों से उद्धार कमाया है। परन्तु यह इस बात का सबूत है कि परमेश्वर *आज्ञाकारी* विश्वास का प्रतिफल देता है (देखें इब्रानियों 5:8, 9; याकूब 2:14–16)। [12]परमेश्वर जगत का न्याय करेगा, परन्तु वह यह न्याय अपने पुत्र ''के द्वारा करेगा'' (देखें प्रेरितों 17:31; रोमियों 2:16)। [13]संसार के जिस भाग में हम रहते हैं, वहां हम कहेंगे, ''उसे चाहिए कि या तो उसे प्रमाण दे या चुप रहे।'' [14]यूहन्ना की पुस्तक का मुज़्य शज़्द ''गवाही'' है। पुस्तक में लगभग पचास बार ''गवाही'' (*marturia*) शज़्द भिन्न-भिन्न रूपों में मिलता है। [15]यूहन्ना 5:32, 33 को सरसरी तौर पर पढ़ने से यह प्रभाव जा सकता है कि आयत 32 वाली गवाही यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की है (आयत 33), परन्तु यीशु यह कहने के लिए कि जिस गवाही की वह बात कर रहा था वह ''मनुष्य की गवाही नहीं'' थी (आयत 34) बल्कि ''यूहन्ना की गवाही से बड़ी है'' (आयत 36) आगे बढ़ गया। NASB में आयत 32 में वह के लिए ''He'' का ''H'' बड़ा है, जो अनुवादकों द्वारा परमेश्वर के लिए मानने का संकेत देता है। [16]''देखो'' शज़्द में इशारा करने का कार्य समझ में आता है। [17]ब्रूस मिलन, *द मैसिज ऑफ़*

जॉन (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इन्टरवर्सिटी प्रैस, 1993), 98. [18]यीशु ने भूतकाल का इस्तेमाल किया, ज़्योंकि उस समय तक यूहन्ना को पहले ही कैद में डाल दिया गया था (मत्ती 4:12)। [19]आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 451. [20]''काम'' यूहन्ना की पुस्तक में यीशु द्वारा अपने आश्चर्यकर्मों के लिए इस्तेमाल किया गया सामान्य शब्द है (देखें 7:3; 10:25, 32, 37, 38; 14:10, 11; 15:24)।

[21]बाद में उन्होंने यीशु पर शैतान की सामर्थ से आश्चर्यकर्म करने का आरोप लगाया (मत्ती 12:24), परन्तु उन्होंने यह इनकार नहीं किया कि उसने आश्चर्यकर्म किए थे। ''सब चकित हुए, और परमेश्वर की बड़ाई हुई'' पाठ पर विचार करें। [22]यूनानी में, इस वाक्य की पहली क्रिया (''ढूंढ़ना'') सांकेतिक (एक तथ्य) भी हो सकती है, जैसे NASB में संकेत मिलता है या आज्ञा सूचक (एक आज्ञा) भी हो सकती है, जैसा KJV में संकेत मिलता है। संदर्भ में, सांकेतिक अधिक उपयोगी लगता है, ज़्योंकि यीशु का आरोप था कि *वे* पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ते थे, परन्तु उसमें उसे नहीं देख पाए थे। [23]अबोथ 2:8; फ्रैंक पैक, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू जान,* भाग 1 (ऑस्टिन, टैक्सस: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1975), 95. [24]मत्ती 5:18 में अनुवादित शब्द ''मात्रा'' या ''बिन्दु'' इब्रानी भाषा के छोटे अक्षरों की छोटी-छोटी मात्राओं को कहा गया है। NASB में ''छोटे से छोटा अक्षर'' आदि है। [25]वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *द बाइबल एक्सपोज़िशन कमैन्ट्री,* अंक 1 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 308. [26]कुछ ''विद्वान'' यह मानने से इनकार करते हैं कि मूसा ने पुराने नियम की पहली पुस्तकें लिखीं, परन्तु यीशु ने कहा कि उसने लिखीं। [27]उदाहरण के लिए व्यवस्था के बलिदान क्रूस पर दिए जाने वाले सिद्ध बलिदान की ओर देखते थे (इब्रानियों 10:4, 12)। [28]यीशु के कहने का अर्थ था कि उसे ठुकराने का उनका यही कारण था। [29]यह टिप्पणी आर. सी. फोस्टर, *स्टडीज़ इन द लाइफ़ ऑफ़ क्राइस्ट* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 454 में उद्धृत एक अज्ञात स्रोत से ली गई। [30]चाहें तो इसे इस तथ्य के लिए कि *यदि* कोई यीशु के दावों को मान लेता है तो उसके लिए ''अवश्य माननीय निष्कर्ष'' है, उसके प्रति पूर्व समर्पण की आवश्यकता सहित कुछ ''अवश्य माननीय निष्कर्ष'' है, इसे चौथा प्वायंट बना सकते हैं।

[31]यूहन्ना की पुस्तक विश्वास पैदा करने के लिए लिखी गई थी (यूहन्ना 20:30, 31)। ऐसा करके यह पुस्तक विश्वास करने की इच्छा रखने वाले को पहचानकर उनसे जो विश्वास नहीं रखना चाहते हैं, अलग करती है। [32]सी. एस. लूईस, *मियर क्रिश्चियनिटी* (न्यू यॉर्क: मैक्मिलन कं., 1952), 55-56. [33]इस प्रवचन में से सुनाने के लिए आपको लोगों को मसीही बनने या मसीह के साथ अपनी वचनबद्धता को नये सिरे से बनाने में उत्साहित करना होगा। मसीही बनने के ढंग पर मरकुस 16:15, 16 और प्रेरितों 2:38 की आयतें हैं।